International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 05-06-2019; Accepted: 08-07-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 16-20

कवि मंझन कृत 'मधुमालती' में लोक–धर्म एवं विश्वास की अभिव्यक्ति

डॉ0 कोमल
हिन्दी विभाग, मैथोडिस्ट गर्ल्स (पी0जी0) कॉलेज, रूड़की, उत्तराखण्ड, भारत।

प्रस्तावना

कवि मंझन मध्यकालीन भक्ति साहित्य की निर्गुण काव्यधारा की प्रेमाश्रयी शाखा के महत्वपूर्ण सूफी कवि हैं। उनके ग्रन्थ 'मुधमालती' में अन्य अनेक सूफी ग्रन्थों की भांति हिन्दू राज परिवार की कहानी वर्णित है। मधुमालती के राजपविार से सम्बन्धित होने के पश्चात भी उसमें जनसामान्य में व्याप्त अनेक लोक रूढ़ियों परम्पराओं लोक धर्म एवं विश्वासों की अभिव्यक्ति हुई है क्योंकि कवि मंझन लोक (जनसामान्य) से जुड़े एक सहृदय कवि हैं।

काव्य साहित्यकार की अनुभूतियों का अभिव्यक्तिकरण होता है और जब ये अनुभूतियॉ लोकानुभूति बन जाती हैं तो इस साहित्य को लोक साहित्य की संज्ञा दे दी जाती है। कोई भी साहित्य अथवा साहित्यकार जिन समकालीन सामाजिक परिस्थितियों के बीच से गुजरता है उनकी छाप उस पर अवश्य पड़ती है।

इतिहास केवल राजा–महाराजाओं के एश्वर्य, उनकी जय–पराजय और अन्य प्रसिद्ध व्यक्तियों की कहानी कहता है। किन्तु युगीन जन जीवन, लोक चेतना लोक धर्म एवं लोक विश्वासों की छवियॉ लोक काव्य में ही अंकित होती हैं। मंझन भी ऐसी ही अभिव्यक्तियों देने वाले लोक कवि हैं। एक मुसलमान कवि होते हुए भी उन्होंने बड़ी आस्था और विश्वास के साथ हिन्दू धर्म और रीति रिवाजों का वर्णन किया है।

'मधुमालती' का रचनाकाल हिजरी सन् 952 अर्थात 1545 ईस्वी है कवि मंझन ने तत्कालीन हिन्दू समाज में प्रचलित 'लोक धर्म' और विश्वास का चित्रण बड़ी संजीवता के साथ किया है।

प्रस्तुत शोध–पत्र में हम कवि मंझन कृत 'मधुमालती' में लोक धर्म एवं विश्वास की अभिव्यक्ति के अन्तर्गत तीन प्रमुख बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित करेगें प्रथम लोक देवी–देवता।

द्वितीय–लोक रूढ़ियॉ और तृतीय लोक विश्वास।

मुस्लिम धर्मानुयायी होते हुए भी कवि मंझन हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में सूक्ष्म ज्ञान रखते है। इस बात का परिचय मधुमालती में वर्णित शिव, ब्रह्म हरि सीता, राम, लक्ष्मण, हनुमान, इन्द्र, कामदेव यमराज, शेषनाग, विश्वकर्मा, कुबेर आदि हिन्दू देवी–देवताओं, नजर लगना शकुन अपशकुन टोना–टोटका, भाग्यवाद, कर्मफल भोगवाद ज्योतिष, विद्या, मन्त्र शक्ति आदि रूढ़ियों और विश्वासों से मिल जाता है। इस सबमें लोक सौन्दर्य की छटा देखने योग्य है।

कूटपद : 'मधुमालती' लोकधर्म एवं विश्वास

धर्म का अर्थ

धर्म एक बहुप्रयुक्त शब्द है और कदाचित इसी कारण इसके अभिप्राय के सम्बन्ध में एक तरल अनिश्चय की स्थिति पायी जाती है। अनेक विद्वानों के द्वारा धर्म के विभिन्न अर्थ किये गये हैं। धर्म शब्द की व्युत्पत्ति पर प्रकाश डालते हुए डा0 व्यास राय कहते हैं कि '' धर्म शब्द की व्युत्पत्ति 'घृ' धातु से हुई है जिसका अर्थ बनाये रखना, धारण करना तथा पुष्ट करना है।'' (1)

''व्युत्पत्ति (शब्द रचना) के अनुसार अंग्रेजी का रिलिजन शब्द (RE–(री) पुनः या पीछे +Ligane (बांधना) से बना है, जिसका अर्थ है–पीछे बांधना = धर्म मनुष्य को पीछे लौटा कर उसके आदि स्रोत से बांध देता है।''(2)

लोक में व्याप्त धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताओं के परिणामस्वरूप ऐसी आस्थाओं का उद्भव होता है, जो जीवन मूल्यों के परिपेक्ष्य में दैनिक जीवन–व्यापारों को निश्चित स्वरूप प्रदान करती है। लोक–जीवन में विहित इन्हीं आस्थाओं एवं मान्यताओं के अन्तर्गत मनुष्य के समस्त क्रिया–व्यापारों में अपनाई गई धार्मिक एवं आध्यात्मिक विचारणाओं से लोक–विश्वासों की स्थापनायें समाज में होती हैं।

धर्म के साथ–साथ में लोक–विश्वास लोक–हृदय में अपना अस्तित्व बनाये रखते हैं।

मध्यकालीन समाज भी इनसे पूर्णतः अविष्ट है फलस्वरूप कवि मंझन कृत 'मधुमालती' में भी लोक–धर्म एवं विश्वास की अभिव्यक्ति मिलती है। जो हिन्दुत्व के रस से सराबोर है। हालांकि अन्य सूफ़ी कवियों की भांति कवि मंझन ग्रन्थारम्भ में पीर पैगम्बरों के वर्णन की परम्परा को अक्षूण्य रखते हुए 'मधुमालती' के आरम्भ में मुहम्मद, ग़ौस का वर्णन करते हुए चारों खलिफाओं की प्रसंशा की है–शेख मुहम्मद की स्तुति करते हुए वे लिखते हैं–

''जस पारस के परसत भीन हेम होई जाइ

तिमि मैं शेख मुहम्मद देखे बिनु साहस सिधि पाइ।।''3

किन्तु रचना में अन्य किसी भी स्थान पर ये आभास नहीं होता कि यह इस्लाम धर्म का ग्रन्थ है। रचनारम्भ को छोड़कर मधुमालती में सर्वत्र हिन्दुत्व की झलक दिखाई पड़ती है।

हिन्दू धर्म में देवी–देवताओं का अपना एक अलग ही महत्व है। वैदिक साहित्य से हमें ज्ञात होता है कि मानव की आवश्यकताओं की तुष्टि का साधन बनने वाले महत्वपूर्ण शक्ति चिह्न ही देवताों के रूप में परिणित हुए। तब व्यक्ति 'वरूण' की उपासना इसलिए करते थे कि वह कृषि के लिए उन्हें जल देता था। 'सूर्य' की गर्मी उन्हें जीवन देती थी। धीरे–धीरे प्रकृति के इन विभिन्न स्वरूपों के मध्य एक सर्वशक्तिमान 'परमेश्वर' की भावना ने जन्म लिया। पाश्चात्य विचारक मैक्डोनल के अनुसार ''मनुष्य के हृदय पर जिस किसी भी ऐसे पदार्थ ने प्रभाव डाला जिससे मनुष्य के भीतर आदर, भय और श्रृद्धा के भाव जागृत हुए, वह न केवल प्रशंसा का पात्र रहा अपितु प्रार्थनास्पद भी माना गया।'' कवि मंझन के काल में यह देव भावना इतनी बढ़ी कि सभी महापुरूषों की देव–रूप में पूजा होने लगी, सम्प्रदाय के प्रवर्तकों द्वारा रचित ग्रन्थों तक की पूजा आरम्भ हो गयी। मुसलमान होते हुए भी कवि मंझन ने हिन्दू, देवी देवताओं का बड़ा ही यथार्थ वर्णन किया है। वे केवल हिन्दू देवी–देवताओं से नहीं बल्कि उनके सन्दर्भ में प्रचलित विभिन्न पौराणिक मान्यताओं से भी परिचित हैं। शंकर के

भी कामदेव से पराजित होने के प्रसंग में उन्होनें लिखा है–

''संकर निजु जासों जग हारा।(1)
तासों को जग जीतै पारा।''

इसी सन्दर्भ में एक अन्य स्थान पर वे लिखते हैं–

''देखि कपोल नारि कै निहचै टरै महेस धियान।।''(2)

ब्रह्मा जी के कमलासन पर आसीन होने की जानकारी भी कवि को है–

''ब्रह्म कंवल महं दुख कर बासा।''(3)

रूद्र, ब्रह्म, हरि का वर्णन भी कवि मंझन ने 'मधुमालती' में यथास्थान किया है और ये 'त्रिदेव' ही नायक मनोहर एवं नायिका मधुमालती के प्रेम के साक्षी हैं। मधुमालती के निम्नलिखित कथन 'त्रिदेवी में उनकी आस्था प्रकट करते हैं–

''हम तुम्ह साच बचा वह कीजै।(4)
रूद्र ब्रह्म हरि अंतर दीजै।''
X X X
''बचा कीन्ह विधि अंतर राखी।(5)
रूद्र ब्रह्म हरि कहं दै साखी।''

राम के अवतार रूप का वर्णन हिन्दू धर्म में कवि मंझन की आस्था को प्रकट करता है:–

''दोसर राम औतरेउ आई।(6)
रावन हनि कै सियैं छंडाई।''

केवल राम ही नहीं राम कथा से जुड़े छोटे–छोटे प्रसंगों की भी सम्यक जानकारी कवि मंझन को है। 'मधुमालती' में लक्ष्मण को शक्ति लगने और हनुमान द्वारा उन्हें संजीवनी लाकर ज़िलाने का उल्लेख मिलता है।

''लक्खन कहं सक़ती परी मोहि बिरह रहा घट पूरी।
पेमां तुइं हनिवंत मैं मेरउ संजीवन मूरि।।(11)
नायिका मधुमालती द्वारा नायक मनोहर का परिचय पूछे जाने पर इन्द्रदेव और शेषनाग का उल्लेख हुआ है।
''कै तुम्ह इंद्रासन के देवता कै पातर के नाग।'' (12)

कामदेवता–रति

कामदेव और उसकी पत्नी रति का वर्णन भी 'मधुमालती' में अनेक स्थानों पर हुआ है। कवि मंझन एक मनोभाव के रूप में कामदेव का वर्णन करते हुए कहते है–

''सुनत कुंवर रस भाउ कै बाता।13
जगेउ मदन बियापेउ गाता।
मदन कीन्ह तब कयां बिगासा।
लहकि आई जग भोग बेलासा।''
X X X
''राते बरन निलज भे नैना।
दुहुं दिसि रची काम कै सेना।''

कामदेव की पत्नी के रूप में देवी 'रति' का भी वर्णन 'मधुमालती' में हुआ है–

''अजहूं न रतिपति गात समानां।''

यमराज का वर्णन

हिन्दू धर्म में 'यमराज' को मृत्यु का देवता स्वीकारा गया है। 'मधुमालती' में अनेक स्थानों पर कवि मंझन ने 'यमराज' का वर्णन किया है जो इस प्रकार है–

''जम न होई पै जिउ लै गएउ।''15
X X X
''जम जिउ लै एक बार निबारै।''16

विश्वकर्मा का वर्णन

कवि मंझन ने नायिका के सौन्दर्य वर्णन में देवशिल्पी विश्वकर्मा का उल्लेख किया है–

''गियं उपमां बरनौं केहि लाई।17
सइं बिसकरमैं चाक फिराई।''

'मधुमालती में अन्य भी कई स्थलों पर कवि मंझन ने विश्वकर्मा का वर्णन किया है।

ग्रह देवता

नायिका के रूप वर्णन में अनेक स्थानों पर कवि मंझन ने 'चन्द्रमा' और राहू का वर्णन किया है। सूर्य और बृहस्पति का भी देवता के रूप में चित्रण किया गया है। नायिका के रूप वर्णन में सामूहिक रूप से चार ग्रहों का वर्णन कवि मंझन ने एक साथ किया है–

''मंगर सूक गुरू सन्हि चारी।18
चौक दसन भय राजकुमारी।''

कुबेर– यक्षों के राजा कहे जाने वाले धन कुबेर का वर्णन भी 'मधुमालती' में मिलता है–

''सुरूज चांद तराइन बासुकि इंद्र कुबेर।19
पेमा दुख सभ रोए धरती गगन सुमेरू

पितृ देव– हिन्दू धर्म में 'पितरो' को देवतुल्य माना गया है। कवि मंझन ने अपनी नायिका मधुमालती के कन्यादान के अवसर पर पितरों का वर्णन किया है।

''कन्यादान कीन्ह नृप देव पितर दै साखि।।''20

उक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि कवि मंझन कृत ''मधुमालती'' में हिन्दू–धर्म से मान्यता प्राप्त अनेक देवी–देवताओं को स्थान मिला है। इस प्रकार कवि मंझन का हिन्दू देवी–देवताओं से सम्बन्धित ज्ञान प्रशंसनीय है।

इसके साथ ही साथ कवि मंझन ने लोक धर्म एवं संस्कृति से जुड़े, अनेक पुराण परूषों जैसे–दशरथ, युधिष्ठिर, हरिश्चन्द, बलि, सहदेव, कर्ण, हातिम, विक्रमराज, श्रवण कुमार तथा पीर–पैगम्बरों जैसे–मुहम्मद साहब, चारों ख़ालीफ़ा, पीर मुहम्मद ग़ौस का वर्णन स्थान–स्थान पर 'मधुमालती' में किया है।

कवि मंझन कृत 'मधुमालती' में लोक रूढ़ियों का वर्णन।

लोक–हृदय अनेक रूढ़ियों का वास होता है और वह बिना कोई तर्क–वितर्क किये, परम्परागत रूप से इन लोक प्रचलित रूढ़ियों का निर्वाह करता जाता है। मध्यकालीन आस्थावान समाज में भी इन रूढ़ियों का पूर्ण पालन हुआ। अतः 'मधुमालती' में इन लोक–रूढ़ियों का अस्तित्वमान रहना स्वाभाविक ही है। 'मधुमालती' का अध्ययन करने पर निम्न लोक–रूढ़ियॉ दृष्टिगत होती हैं–

शकुन– अपशकुन,
नजर लगना,
अंगो का फड़कना,
टोना टोटकां
यात्रा सम्बन्धी रूढ़ियॉ
मनौती मानना।

उक्त रूढ़ियों का सम्यक् वर्णन हमारे द्वारा आगे किया जा रहा है–

शकुन– अपशकुन

जनमानस को उत्साहित शंकित करने वाले शकुन–अपशकुन, मंगन–अमंगल सूचक माने जाते हैं और मानव द्वारा अपने दैनिक जीवन में मान्य इन शकुनों और 'अपशकुनों के अभिप्राय भी भिन्न–भिन्न होते है। कवि मंझन कृत 'मधुमालती' में इनका वर्णन सहजता से किया गया है।

नायक मनोहर की बारात–प्रस्थान के समय कवि ने शुभ शकुनों की झड़ी सी लगा दी है।

''चलत सगुन भल आगें आवा।[21]
काग मिरिग दहिने देखरावा।
नारि आउ उर बालक लिहें।
बांभन तिलक दुवादस दिहें।
दहिन खरहा बाएं बेसारा।
महरि सीस लै दही पुकारा।

मानव हृदय भी शकुन और अपशकुनों का संकेत देता है। अकस्मात ही हृदय का विषाद से भर जाना अपशकुन माना जाता है। इसी अपशकुन के कारण प्रेमा की माता को प्रेमा के साथ होने वाले अनर्थ का पूर्वाभास हो जाता है और वह उसे बाहर जाने से रोकते हुए कहती है–

मातैं कहा आजु इहवां घर खेलहु केलि कराहु।[22]
भरम होइ किछु मो जिय बाहेर कतहु न जाहु।।''

इसी प्रकार मानव–हृदय का हर्ष शकुन–सूचक माना जाता है।

नज़र लगना

नजर लगना सर्वाधिक लोक–प्रचलित रूढ़ि है इसका सम्बन्ध सुन्दरता और गुणवता से है।

प्रायः माना जाता है कि सुन्दर और गुणी व्यक्ति या वस्तु को अधिक नज़र लगती है।

'मधुमालती' में केवल एक ही स्थान पर नज़र लगने का वर्णन मिलता है। सहनायक ताराचन्द के सहनायिका प्रेमा को देखकर मुर्च्छित हो जाने पर मधुमालती की सखियॉ इसे नज़र का प्रभाव मानती हैं–

''कै सो आहि डिठियावा काहीं।[23]
लौटे परा लाइ गर बाहीं।''

अंगो का फड़कना।

शरीर के आँख हाथ आदि अंगों का फड़कना भी शुभ या अशुभ सूचक होता है। प्रायः कहा जाता है कि शरीर के बांये अंगो का फड़कना शुभ होता है और दांये अंगो का फड़कना अशुभ होता है।

मधुमालती की सखी प्रेमा के आगमन से पूर्व उसके पिता राजा चित्रसेन के कथन से इसका संकेत मिलता है–

''फरकहिं नैन भुआ बर मोरें।[24]
प्रान पियर आउ कोइ कोरें।
सगुन भाउ मोहि अस किछु होई।
मिलिही परान पियारा कोई।''

टोना टोटका

लोक जीवन में टोने और टोटको की परम्परा बड़ी प्राचीन ज्ञात होती है। टोटके मुख्यतः मंगलाशा से ओतप्रोत होते है किन्तु टोने में एक व्यक्ति की मनोकामना के पूर्ण होने और दूसरे का अहित होने की पूर्ण सम्भावना बनी रहती है। 'मधुमालती' में केवल एक ही स्थान पर टोने का उल्लेख हुआ है।

निर्जन वन में अपरिचित मनोहर को देखकर प्रेमा उससे पूंछती है–

''कै रें माइं तोहि दीन्ह सरापा।[25]
कै काहूं सिर टोना थापा।''

यात्रा सम्बन्धी रूढ़ियॉ :– यात्रा सम्बन्धी रूढ़ियों के अन्तर्गत, किसी निश्चित दिशा में किस दिन, किस तिथि और क़िस ग्रह में जाना हितकर अथवा हानिकारक है, इन सब बातों पर विचार किया जाता है।

महारस नगर की खोज में जाने से पूर्व सहनायक ताराचन्द द्वारा शुभ लग्न का निश्चय किया जाता है:–

''सुकल पच्छ सनिवार सातवैं सुलगन कीन्ह पयान।''[26]

मनौती मानना

अपने पुरूषार्थ पर संदेह होने या किसी अत्यन्त कठिन कार्य की सिद्धि में अनिश्चय की स्थिति होने पर, निराशा से ग्रस्त और असहाय मानव प्रायः किसी अलौकिक शक्ति में विश्वास कर, उससे सहायता मांगता है और अपने कार्य के साफल्यार्थ मनौती मानता है। इसे मन्नत माँगना भी कहते हैं।

मधुमालती की सखी प्रेमा नायक मनोहर की विजय कामना से मनौती मानती है–

''पेमां मंदिल डंडवत परी।[27]
दुइ कर जोरि मनावै हरी।
सीस पुहुमि धरि बिनवै बाला
कुंवरहि तुहं जै देहि दयाला।''

स्पष्ट है कि तत्कालीन मानव अनेक लोक–रूढ़ियों का पालन करते थे।

अत्याधुनिक मानव भले ही इन रूढ़ियों को साकारात्मक और नाकारात्मक मनः स्थिति की उपज कहकर नकार दे किन्तु जनसामान्य आज भी मंगलाशा और अमंगलनिवार्णार्थ इनका निर्वाह करता है।

(3) लोक–विश्वास

भारतीय जनमानस आदिकाल से ही परम आस्तिक एवं आस्थावान रहा है और यहॉ अनेक प्रकार के विश्वास, ऐसे विश्वास जिनको तर्क और बुद्धि की तुला पर नहीं तोला जा सकता, मान्य और प्रचलित रहे हैं।

लोक विश्वास का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है इसके अन्तर्गत–भवितव्यता, भाग्यवाद, कर्म–बन्धनों का भोग, अलौकिक शक्तियों में विश्वास, ज्योतिष विद्या एवं मन्त्र–तंत्र में विश्वास आदि का उल्लेख किया जा सकता है। आगे हम उक्त बिन्दुओं के सन्दर्भ में विवेच्य ग्रन्थ 'मधुमालती' पर विचार करेगें।

भाग्यवाद

भाग्यवाद का सिद्वान्त प्राचीनकाल से ही मानव के अन्तःकरण में गहनता से समाया हुआ है। वह भाग्यफल को अपरिवर्तित, सर्वशक्तिमान और अवश्यमेव घटित होने वाला मानता है।

लोक–धारणा के अनुसार मनुष्य के जीवन में घटित होने वाली शुभ और अशुभ घटनाओं का सम्बन्ध भाग्य से है और मनुष्य के इस भाग्य का निर्धारण विधाता द्वारा उसके पूर्वार्जित कर्मों के आधार पर किया जाता है।

कवि मंझनकृत 'मधुमालती' भाग्यवाद के इस सिद्वान्त से आद्योपान्त अनुप्राणित है।

नयिका मधुमालती की सखियों की मान्यता है कि भाग्यलिखित समय से पूर्व व्यक्ति कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता–

''जो रे काल्हि पर धरेउ गोसाईं।[28]
सोन आजु पाइय बरियाईं।''

भाग्य को कर्म की संज्ञा देते हुए नायक मनोहर कहता है–

''मकु सो करम जागि मोहि जाई।''[29]

भाग्यवाद के सम्बन्ध में एक और विश्वास अत्याधिक प्रचलित है कि भाग्य मनुष्य के मस्तक पर अंकित रहता है–

''करम होई जौ लिखा लिलारा।''30

'मधुमालती' के सभी पात्र भाग्यवाद में पूर्ण विश्वास रखते हैं।

भवितव्यता

भवितव्यता को लोकभाषा में होनी कहा जाता है एक लोकोक्ति के अनुसार 'होनहार बलवान होती है। इसी लोकमन्त्र से स्पष्ट हो जाता है कि भवितव्यता अपरिहार्य होती है। 'मधुमालती' में इस लोकानुमोदित विश्वास का यथास्थान वर्णन हुआ है, इसे व्यक्त करते हुए कवि कहते हैः–

''जनमौती खति लाभ दुःख जो किछु लिखा लिलार।[31]
तेहि जौ तीन भुवन मिलि लागैं लिखा को मेटैं पार।।''

राजा हो या रंक होनी किसी के लिए नहीं टलती। उसे न तो बदला जा सकता है और न ही घटित होने से रोका जा सकता है।

कर्मफल भोगवाद में विश्वास।

यथा कर्म तथा फल का सिद्धान्त भारतीय संस्कृति का प्राणतत्व है। कर्मानुसार फल की प्राप्ति में भारतीय जनमानस को अपूर्व विश्वास है।

कवि मंझन कृत 'मधुमालती' में भी इस लोक–विश्वास को पूर्ण अभिव्यक्ति मिली है। सुकृत्यों का फल सदैव लाभकारी होता है। इसीलिए आकस्मिक सुफल प्राप्ति को पूर्व पुण्य का प्रभाव कहा गया है।

''पुब्ब पुन्नि आहेउ किछु मोरा।[32]
जेइं मुख आनि देखाएउ तोरा।
कै करवत ओहिं जनम देवाएउं।
ताहि पुन्नि तोहि दरसन पाएउं।''
X X X
''धनि धनि पुब्ब करम जग जेही।33
अकसमाद मिलि जाइ सनेही।''

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि कवि मंझन के द्वारा 'भुक्तिवाद' का पूर्ण समर्थन किया गया है।

प्रकृति के क्षतिपूर्ति नियम में विश्वास

प्रकृति सुख–दुख, अंधकार–प्रकाश, शीत–उष्ण और उत्थान–पतन आदि विरोधी तत्वों के बीच सामंजस्य बनाकर चलती है। मधुमालतीकार ने भी प्रकृति के इस न्याय को नतमस्तक होकर स्वीकार किया है। वे कहते हैः–

''मंझन एहि कलि दुःख बिन सुख मंति चाहै कोइ।[34]
प्रथमहि तरू पतझार कर तौ नौ पल्लौ होइ।।''

पुत्रेषणा विषयक लोक विश्वास

लोक में यह विश्वास प्रचलित है कि पुत्र द्वारा पिण्डदान से ही माता–पिता की मृतात्मा को मुक्ति मिलती है। पुत्र का तारणहार के रूप में वर्णन करते हुए नायक मनोहर के पिता राजा सूरजभान कहते है–

''एक न पूत विधि दीन्हॉ जासों उतरौ पार।।[35]

ज्योतिष विद्या में विश्वास– ऐसा विश्वास किया जाता है कि दैवी शक्तियाँ ग्रह और नक्षत्रादि मनुष्य के भाग्य को प्रभावित करते हैं। ज्योतिष के आधार पर मधुमालती की सखी प्रेमा उसे प्रियमिलन का संकेत देती है–

''औ सनि है सखी छठउं तुम्हारा।[36]
चढ़हि हाथ पाछिलि निधि बारा।
नवंए गुरू है सखी जो तो ही।
निजु जानहु चित मिलै बिछोही।
औ मंगल है तिसरे तेजा।
चढ़े आइ पीतम निजु सेजा।''

स्वर्ग और नर्क की कल्पना

स्वर्ग और नर्क दोनों विपरीतार्थक शब्द हैं और लोक–हृदय इन दोनों की स्थिति में विश्वास रखता है। मानव–कल्पना की उड़ान जिन–जिन सुखों तक पहुॅची उन सभी सुखों की प्राप्ति उसने स्वर्ग में मानी है।

'मधुमालती' में कवि मंझन ने सुकृत्यों से स्वर्ग और दुष्कृत्यों से नर्क की प्राप्ति का वर्णन किया है–

''निमिख लागि जो आपुहि नांसा।[37]
त कहं नरक माहि था बासा।
पाप पंथ चढ़ि जेइं सत राखा।
सरग अमिअं फल तेइं पै चाखा।''

अलौकिक शक्तियों में विश्वास

जनमानस आदिकाल से ही चमत्कारिकता और अलौकिकता में विश्वास करता आया है।

मधुमालतीकालीन समाज भी इन शक्तियों के प्रभाव से अछूता नहीं है। वहॉ भी इन अद्भुत, अलौकिक शक्तियों का अस्तित्व विद्यमान है इनका वर्णन निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से किया जा सकता है।

मंत्र शक्ति में विश्वास

लोक–मान्यता के अनुसार मन्त्र शक्ति द्वारा असंभव कार्य भी संभव बनाया जा सकता है। 'मधुमालती' में नायक मनोहर के उपचार के लिए आया सयाना (महता) मन्त्र साधना में विश्वास रखता है, वह अपनी मन्त्र शक्ति का वर्णन करते हुए कहता है–

''मंत्र सकति सेउं गा बहुरावउं।[38]
कहहि तौ मुवा जियाइ देखावउं।
सेस इंद गुन सकति बुलावउं।
चहौं त मेरू सुमेरू डोलावउं।''

मधुमालती की माता रूपमंजरी मंत्र–शक्ति के प्रभाव से ही उसे पक्षिणी बना देती है। और फिर मंत्र शक्ति से ही वह मधुमालती को पूर्ववत कर देती है–

''रूपमंजरी पढ़ि कै छिरका मधुमालती मुख नीर।39
पहिलइं रूप भई बर कामिनि परिहरि पंखि सरीर।।''

ठगौरी, ठगलाडू और लुक अंजन

लोक विश्वासानुसार ठगौरी एक ऐसी जड़ी होती है, जिसके माध्यम से किसी के मन को पूर्णतः अपने वश में कर लिया जाता है। कवि मंझन ने भी 'मधुमालती' में इसका वर्णन किया है। नायक मनोहर के सन्दर्भ में नायिका मधुमालती कहती है–

''किहेहु मोहि रस बातन्ह बौरी।[40]
हरेहु जीउ सिर बाहि ठगौरी।''

जिन लड्डूओं को खिलाकर इच्छित व्यक्ति को ठगा जा सके वे ठग लडडू कहलाते है।

इसके अतिरिक्त लुक अंजन का वर्णन भी 'मधुमालती' में किया गया है। लुक अंजन एक ऐसा काज़ल होता है। जिसे नेत्रों में लगाने के उपरान्त व्यक्ति अदृश्य हो जाता है। इसी प्रकार अन्य मानवेत्तर शक्तियों जैसे–भूत–प्रेत, बेताल, डायन, राक्षस आदि का वर्णन भी मधुमालतीकार ने किया है।

भूत–बेताल का वर्णन करते हुए कवि मंझन कहते है–

''कै काहू मोहि भोरएउ कै हरेउ भूत मसान।[41]

शपथ या सौगन्ध भी परोक्ष रूप से एक लोक विश्वास ही है। पारस्परिक सन्देह को दूर करके विश्वास की अभिवृद्वि करने के लिए मधुमालती में शपथ का निधान मिलता है। श्राप और वरदान के लोक विश्वास को भी मधुमालती में स्थान मिला है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि 'मधुमालती' में अनेक लोकानुमोदित विश्वासों की अभिव्यक्ति हुई हैं, जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि तत्कालीन समाज इनमें पूर्ण विश्वास रखता रहा होगा,

निष्कर्ष

कवि मंझन के काव्यानुशीलन से स्पष्ट होता है कि तत्कालीन समाज विभिन्न देवी–देवताओं और सिद्ध पुरूषों तथा रूढ़ियों में अटूट विश्वास रखता और उनसे निकटता का सम्बन्ध अनुभव करता रहा होगा, इसीलिए कहीं तो उपमान और कहीं दृष्टांत रूप में कवि मंझन ने अनेक देवी–देवताओं का वर्णन 'मधुमालती' में किया है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि इन देवी–देवताओं लोक रूढियों एवं विश्वासों के सम्बन्ध में प्रचलित अनेक प्रसगों एवं कथाओं का सम्यक ज्ञान कवि मंझन रखते हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कवि मंझन ने अन्य सूफ़ी कवियों की भांति अपने ग्रन्थ 'मधुमालती' में लोक धर्म एवं विश्वास की अभिव्यक्ति हिन्दू धर्म को केन्द्र में रखकर की है। लोक की तरफ कवि मंझन का झुकाव कुछ अधिक है जिसका प्रमाण लोक में प्रचलित छोटी–छोटी रूढ़ियों और विश्वासों का 'मधुमालती' में वर्णन होने से मिलता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 व्यास मुनि रायः भक्तिकालीन काव्य नीतिपरक मान्यताएँ, पृ0 25
2. स्वामी रामतीर्थः हमारा राष्ट्रीय धर्म, पृ0 10
3. मंझनः मधुमालती, पद–16
4. A.A. Mecdonall: The vedic mythology, P-2
5. मंझन : मधुमालती, पद–124
6. मंझनः मधुमालती, पद – 86
7. मंझनः मधुमालती, पद – 115
8. मंझनः मधुमालती, पद – 128
9. मंझनः मधुमालती, पद – 130
10. मंझनः मधुमालती, पद – 288
11. मंझनः मधुमालती, पद – 244
12. मंझनः मधुमालती, पद – 101
13. मंझनः मधुमालती, पद – 124
14. मंझनः मधुमालती, पद – 200
15. मंझनः मधुमालती, पद – 141
16. मंझनः मधुमालती, पद – 323
17. मंझनः मधुमालती, पद – 92
18. मंझनः मधुमालती, पद – 88
19. मंझनः मधुमालती, पद – 218
20. मंझनः मधुमालती, पद – 446
21. मंझनः मधुमालती, पद – 440
22. मंझनः मधुमालती, पद – 197
23. मंझनः मधुमालती, पद – 472
24. मंझनः मधुमालती, पद – 281
25. मंझनः मधुमालती, पद – 191
26. मंझनः मधुमालती, पद – 379
27. मंझनः मधुमालती, पद – 264
28. मंझन मधुमालतीः, पदः 144
29. मंझनः मधुमालती, पद – 169
30. मंझनः मधुमालती, पद – 240
31. मंझनः मधुमालती, पद – 63
32. मंझनः मधुमालती, पद – 106
33. मंझनः मधुमालती, पद – 447
34. मंझनः मधुमालती, पद – 143
35. मंझनः मधुमालती, पद – 45
36. मंझनः मधुमालती, पद – 312
37. मंझनः मधुमालती, पद – 127
38. मंझनः मधुमालती, पद – 159
39. मंझनः मधुमालती, पद – 393
40. मंझनः मधुमालती, पद – 123
41. मंझनः मधुमालती, पद – 186